डा. मुख्तार सिंह

निदेशक (अप्रैल, 1969 से अक्तूबर, 1975 तक)

(बीज सस्य विज्ञान और उसके रखरखाव प्रबंधन में सुधार करते हुए कृषि उत्पादन की भंडारण तकनीक को प्रोन्नत किया)

जन्म एवं शिक्षा

डा. मुख्तार सिंह का जन्म 5 जनवरी, 1915 को पश्चिमी पंजाब (जो कि अब पाकिस्तान में है) में हुआ था। उन्होनें पंजाब विश्वविद्यालय से सन् 1934 में स्नातक एवं सन् 1942 में प्लांट फिजियोलॉजी में स्नातकोततर की उपाधि प्राप्त की। सन् 1948 में उन्होंने एडिनबर्ग, ब्रिटेन से पीएचडी. की डिग्री हासिल की।

व्यावसायिक उपलब्धियां

डा. मुख्तार सिंह ने अपने कैरियर की शुरूआत सन् 1935 में पंजाब के कृषि विभाग में अनुसंधान सहायक के रूप में की तथा सन् 1945 तक वहां पर कार्यरत रहे। सन् 1945-48 के दौरान वह सस्य विज्ञान में पीएचडी करने एडिनबर्ग, ब्रिटेन गये। भारत, वापिस लौटने के बाद, केन्द्रीय तम्बाकू अनुसंधान संस्थान, राजामुन्दरी, आन्ध्र प्रदेश में आपने सस्य विज्ञान विशेषज्ञ के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। सन् 1950 में आप केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, पटना में वहां के पहले कृषि वैज्ञानिक के रूप में उनका स्थानान्तरण हुए तथा वहां आपने लगभग सात वर्ष तक कार्य किया। तत्पश्चात् आप भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली चले गये। वहां आप उप कृषि आयुक्त (सस्य विज्ञान) के पद पर प्रोन्नत हुए तथा इस पद पर तीन वर्ष तक कार्य किया। सन् 1965 में आप भारतीय चारागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झांसी के निदेशक के पद पर नियुक्त किये गये तथा सन् 1968 से 1969 तक केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के निदेशक पद का अतिरिक्त कार्यभार संभाला। सन् 1969 में डा. मुख्तार सिंह, केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक बने तथा उसी पद से अक्तूबर 1975 में सेवानिवृत्त हुए, सेवानिवृत्ति के पश्चात् सन् 1975 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा आप पंजाब कृषि विश्वविद्यालय,

लुधियाना के सस्य विज्ञान विभाग में अनुसंधान कार्यकर्ताओं/छात्रों की टीम का मार्गदर्शन करने के लिए इमिरेट्स वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) के रूप में नियुक्त किए गए।

सम्मान

डा. मुख्तार सिंह भारत एवं विदेशों में बहुत सारी व्यावसायिक संस्थाओं के सदस्य रहे। सन् 1970-72 तक वे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में मृदा विज्ञान और सस्य विज्ञान समिति के अध्यक्ष रहे। सन् 1972 में इंडियन सोसायटी ऑफ प्लांट फिजियोलॉजी के अध्यक्ष एवं सन् 1974-1975 तक 'भारतीय आलू संघ' के संस्थापक अध्यक्ष रहे। आपने आलू एवं कंद फसलों की अध्ययन टीम का नेतृत्व किया तथा वह जल उपयोग के उप-समूह, कृषि जलवायु क्षेत्रों, कृषि पर राष्ट्रीय आयोग के तहत् चारा फसलों के सदस्य रहे।